फरीदाबाद
मजदूर समाचार
अनुभवों तथा विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

व्हाट्सएप के जरिये भी अपनी बातें हम तक पहुँचा कर चर्चा का दायरा बढायें। मजदूर समाचार फोन पर पायें और अपने ग्रुपों में भेज कर आदान-प्रदान बढायें। हमारे इस नम्बर पर व्हाट्सएप मैसेज भेजें : 9643246782

नई सीरीज नम्बर 372

जून 2019

अनिश्चित, निश्चित के बाहर

क्या यह कह सकते हैं कि जीवन क्या होगा यह एक खुला प्रश्न है ?

हरेक के लिये ?

हाँ। सब के लिये हर समय यह खुला मान सकते हैं।

आप क्या यह कह रहे हो कि कुछ भी निश्चित नहीं है ?

साथी आप लोगों ने एक ऐसी बातचीत छेड़ दी है कि मेरी शिकंजी गर्म हो जायेगी।

हर वक्त ऐसे मजाक कर हमारी बातचीत की अहमियत को शार्ट सर्किट मत कर। बात थोड़ी गम्भीर रहने दे। यह निश्चित और अनिश्चित की बात नहीं है। बात कुछ और है।

ओके। केवल अनिश्चितता और निश्चितता में जीवन क्या होगा को नहीं देखें। और फिर किस ढँग से ? खुलापन माना। और ?

हमें एक-दूसरे में एक उबाल दिखता है ना। लगता है जैसे इन्जन में बैठे हैं। किसी में भी यह गति थोड़ी कम दिखे तब हम एक-दूसरे से पूछते हैं मायूस क्यों हो ? क्या हुआ है ?

खैर। मेरी सहेलियाँ तो मुझे कहती रहती हैं कि तू अन्तरिक्ष यान में रहती है।

वो तो दिखता है। तुझे कभी मायूस नहीं देखा। लेकिन एक बात अभी ध्यान में आई कि जीवन क्या होगा इसका खुलापन एक सार्वजनिक देख-रेख का अभ्यास भी लिये है।

आप यह कह रहे हो कि मायूस क्यों हो वाला सवाल एक अपनेपन और साँझी आत्मीयता से आता है।

अपनापन और साँझी आत्मीयता कहाँ से आते हैं ? मैं यह सवाल केवल तर्क के लिये नहीं पूछ रहा। अपने आसपास, यहाँ-वहाँ से गुजरते समय अनगिनत क्रियाओं को देखता हूँ तब यह सवाल दिमाग में आते हैं।

स्वयं से आपके प्रश्न बहुत-ही सुन्दर हैं। यह सवाल एक पहेली जैसे हैं। और यह पहेली खुद को हर बार फिर से ऊर्जा देती रहती है।

कैसे ?

तूझे नहीं लगता कि असेम्बली लाइन में किसी भी समय हम सब के इन्जन एक अलग लय ले सकते हैं। सब को पता है। अनुभव करते हैं। कभी-कभी बात भी कर लेते हैं। यह है जो जीवन क्या होगा के सवाल को खुला रखता है।

थोड़ा हट कर लग सकता है। लेकिन थोड़ा मुझे सुनो। मानेसर की मई में भी फैक्ट्री में काम करते समय मुझे बहुत ठण्ड लगती है। नई मशीनें, नये रोबोट सोलह डिग्री तापमान में ही काम कर सकते हैं। कहते हैं अन्यथा बिगड़ जायेंगे। हमें योग अभ्यास करवाया जाता है ताकि हम रोबोट के साथ लय में काम कर सकें। और बाहर जब निकलता हूँ तो साथी बोलते हैं कि मौज है तेरी, कोई पसीना ही नहीं दीखता। और मैं बोलता हूँ कि बहुत-ही ज्यादा उत्पादन करके निकला हूँ।

तो कहानी क्या है ?

कहानी यह है कि मैं कनफ्युज्ड हूँ। काम बदल रहा है। काम का नक्शा बदल रहा है। तनखा का कोई सिर-पैर ही नहीं रहा। किस हिसाब से है पता ही नहीं। मेरी तनखा तो एक-दो मिनट काम से निकल जाती है।

तू कह क्या रहा है ? तू सम्भावनाओं की बात कर रहा है क्या ? क्या हमारी बातचीत का दायरा छोटा है ? तू क्या यह कह रहा है कि धरातल बदल गया है ? या बदल रहा है ?

मेरा कहना यह है कि जीवन शब्द को ही नये सिरे से सोचें।

क्रूर बुद्धि की एक झलक

✶**ज्योति एपरेल्स** (158 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव) फैक्ट्री में 500 मजदूरों ने 25 मई को सुबह 9 बजे काम आरम्भ किया था और 26 को सुबह 6 बजे छूटे तब मैनेजमेन्ट ने भोजन के लिये 100-100 रुपये दिये थे। रात 9 बजे खाना खाने फैक्ट्री से बाहर नहीं जाने दिया था और मैनेजमेन्ट ने फैक्ट्री में भोजन मँगवाया भी नहीं। जनरल मैनेजर : "रात को खाना खाने नहीं जाने दूँगा क्योंकि भाग जाओगे।" ज्योति एपरेल्स में शिफ्ट सुबह 9 से साँय 6 की है परन्तु हर रोज रात 10, रात 12 बजे तक फैक्ट्री में रोकते हें। और महीने में कम से कम 6 फुल नाइट लगती हैं — सुबह 9 से अगले दिन सुबह 6 बजे तक काम, तीन घण्टे के ब्रेक के बाद फिर 9 बजे से काम। टेलरों का महीने में 150-200 घण्टे ओवर टाइम और फिनिशिंग वरकरों का 200 घण्टे से ज्यादा। पे-स्लिप में मैनेजमेन्ट 20 घण्टे से कम ओवर टाइम दिखाती है। पूरे ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। अधिकतर मजदूर कम्पनी ने स्वयं भर्ती किये हैं।

✶ **हाइटेक गियर** (24-25-26 सैक्टर-7, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। खड़े-खड़ काम। टी-ब्रेक में भी खड़े रहना क्योंकि उस समय कम्पनी मीटिंग रखती है। पे-स्लिप में ओवर टाइम दुगुनी दर से दिखाते हैं जबकि है सिंगल रेट से। पे-स्लिप में ओवर टाइम के आधे घण्टे ही दिखाते हैं।

✶**फ्लीट गास्केट** (डी-50 ओखला फेज-1, दिल्ली) ऑटो पार्टस फैक्ट्री में काम करते करीब 120 मजदूरों में से 20-25 की ही ई एस आई तथा पी एफ हैं। सुबह साढे नौ से रात साढे आठ बजे तक रोज काम, रविवार को 8 घण्टे। हैल्पर की तनखा 14,000 की बजाय 8000 रुपये। ऑपरेटर की तनखा 9500-10,000 रुपये। जिनकी ई एस आई तथा पी एफ हैं उनकी तनखा में ओवर टाइम के पैसे मिला कर बैंक में दिल्ली ग्रेड अनुसार वेतन दिखाते हैं। फैक्ट्री में एक्सीडेन्ट बहुत होते हैं। हर महीने एक-दो के हाथ कटते हैं। एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरते। प्रायवेट अस्पताल ले जाते हैं।

✶**होराइजन बी पी ओ** (749 उद्योग विहार फेज-5, गुड़गाँव) मेडिकल बिलिंग वाला कॉल सेन्टर है। तीन वर्ष से काम कर रहे एक सफाईकर्मी से महिला मैनेजर ने यह कह कर रिजाइन लिया कि कम्पनी तुम्हारी पेमेन्ट नहीं कर पा रही। इस वरकर के फण्ड के पैसे नहीं निकल रहे — मैनेजमेन्ट कहती है कि एक वर्ष की पी एफ राशि जमा करनी है। दो साल पहले कम्पनी ने कम्प्युटरों पर काम करते पाँच-छह सौ वरकर निकाले थे और उन्हें किये काम के पैसे भी नहीं दिये। वे वरकर अपनी पेमेन्ट के लिये कम्पनी आते रहते हैं और मैनेजमेन्ट कहती रहती है कि पैसे बैंक खाते में भेज देंगे।

✶**स्टाइल स्टिच** (90 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में पानी-पेशाब के लिये टोकन लेना पड़ता है। फैक्ट्री में नाइट बहुत लगती है, सुबह साढे नौ बजे से रात 1 बजे तक ड्युटी। महीने में 150-200 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। अधिकतर मजदूरों की ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं, और पेमेन्ट नगद। नौकरी छोड़ने पर दस-पन्द्रह दिन किये काम के पैसे देने से मना करते हैं और धमकाते हैं।

✶**पोलीपैक** (194 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव) फैक्ट्री में लन्च का कोई समय नहीं — कभी 12 बजे, कभी 1 बजे, कभी 2 बजे। दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों के साथ ऑपरेटर और सुपरवाइजर तू -तू मैं-मैं करते हैं। तनखा देरी से बैंक में भेजते हैं, 16-20-22 तारीख को। फैक्ट्री में पीने का पानी खारा और गर्मी में गर्म भी।

✶**अनु ऑटो इन्डस्ट्रीज** (52 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी बहुत कम, 27-30 रुपये प्रतिघण्टा। जे पी मिण्डा समूह की इस फैक्ट्री में 12 घण्टे की ड्युटी के दौरान कम्पनी एक कप चाय भी मजदूरों को नहीं देती। कैन्टीन नहीं है। बाहर से खाना आता है, कम आता है, कुछ को मिलता भी नहीं है, भोजन के लिये वरकर को 30 रुपये नगद देने पड़ते हैं। पाँच ठेकेदार कम्पनियों के जरिये मजदूर रखे हैं। सैलरी स्लिप नहीं देते। पी एफ नम्बर नहीं बताते।

और बातें यह भी

✶**डेन्सो हरियाणा** (3 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में सात महीने बाद ब्रेक कर कार्ड नम्बर और ठेकेदार कम्पनी बदल देते थे। तीन-चार वर्ष से काम कर रहे मजदूरों को मैनेजमेन्ट निकालती नहीं थी। दो महीने पहले डेन्सो कम्पनी ने अपनी झज्जर फैक्ट्री बन्द की। करीब 400 परमानेन्ट मजदूर झज्जर फैक्ट्री से मानेसर फैक्ट्री लाये गये हैं। और, तीन-चार साल से मानेसर फैक्ट्री में काम कर रहे टेम्परेरी वरकरों में से 100 से ज्यादा को एक महीने में कम्पनी ने निकाल दिया है।

✶**मोडलामा** (200 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव) फैक्ट्री में काम छोड़ने के बाद किये काम के पैसों के लिये चक्कर कटवा कर वरकर की चप्पल तुड़वा देते हैं।

✶**माइक्रो प्रिन्ट्स** (192-193 डी एस आई डी सी ओखला फेज-1, दिल्ली) प्रेस में करीब 100 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम दिखाया नहीं जाता। आठ घण्टे की बजाय 12 घण्टे ड्युटी पर हैल्परों को दिल्ली का ग्रेड देना। ई एस आई तथा पी एफ हैं और तनखा बैंक में।

✶**जे एन एस** (4 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में आई टी आई को मकान भत्ता 450 रुपये और बारहवीं वालों को 150 रुपये महीना था। शिफ्ट अलाउन्स सब वरकरों को 650 रुपये महीना था। पाँच-छह वर्ष से लगातार काम कर रहे मजदूरों को ही अब यह भत्ते कम्पनी दे रही है। बाकी सब वरकरों के यह भत्ते जे एन एस कम्पनी ने बन्द कर दिये हैं।

✶**चेल्सिया मिल** (360 उद्योग विहार फेज-4, गुड़गाँव) छोड़े तीन साल हो गये हैं परन्तु मजदूर को फण्ड के पैसे नहीं मिले हैं।

✶**कलर डॉट** (208 डी एस आई डी सी ओखला फेज-1, दिल्ली) प्रेस में हैल्परों की तनखा 8000 रुपये, नगद देते हैं। इंकमैन की तनखा 10-12 हजार रुपये। ओवर टाइम के पैसे मिला कर बैंक में भेजते हैं और इंकमैन की तनखा दिल्ली में ग्रेड अनुसार दिखाते हैं।

✶**रीज इन्टेलिजेन्ट लाइटिंग** (321 सैक्टर-7, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री छोड़ने पर मजदूरों को 10-15 दिन किये काम के पैसे नहीं मिलते। रीज मैनेजमेन्ट कहती है कि ठेकेदार जाने।

✶**24 सेक्युरिटी सर्विस** (कार्यालय वसन्त कुँज, दिल्ली) द्वारा **बत्रा अस्पताल** को सप्लाई गार्ड को 8 घण्टे की ड्युटी पर ई एस आई तथा पी एफ राशि काट कर महीने के 14,600 रुपये। मोहन कोऑपरेटिव इन्डस्ट्रीयल एस्टेट में **हीरो मोटर्स** को सप्लाई 24 सेक्युरिटी गार्ड को ई एस आई तथा पी एफ राशि काट कर प्रतिदिन 12 घण्टे की ड्युटी पर 30-31 दिन के 21,000 रुपये। मोहन कोऑपरेटिव में **रोहन मोटर्स** के शोरूम, वर्कशॉप, टूव्हीलर, बॉडीशॉप में 24 सेक्युरिटी गार्ड को ई एस आई तथा पी एफ राशि काट कर प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर 30-31 दिन के 12,400 रुपये।

✶**सन्धार कम्पोनेन्ट्स** (24-25 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। ओवर टाइम सिंगल रेट से। प्रोडक्शन में वरकर एक की बजाय तीन मशीनें चलाये..... मजदूर छोड़ते रहते हैं। रोज भर्ती। तीन सौ वरकरों में तीस परमानेन्ट मजदूर हैं।

✶**ट्रैकऑन कूरियर** (सी-50 ओखला फेज-2, दिल्ली) ने दो सेक्युरिटी कम्पनियों के जरिये 4 गार्ड रखे हैं। एक के गार्ड को प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर 30-31 दिन के 9000 रुपये और दूसरी के गार्ड को रोज 12 घण्टे ड्युटी पर 30-31 दिन के 11,000 रुपये। ट्रैकऑन वरकर को दिल्ली का ग्रेड नहीं, ई एस आई तथा पी एफ राशि काट कर तनखा 9-10 हजार रुपये। ✶**फैशन एक्सप्रेस** (16 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में महीने में 48 घण्टे तक ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से। ओवर टाइम के 48 से ऊपर घण्टों को सामान्य ड्युटी कहते हैं और उनके बदले में छुट्टी देते हैं।

न्यायालय

मुम्बई क्षेत्र में नौकरी कर रही अनिता को 22 मार्च 2012 को एफ. एल. स्मिथ कम्पनी ने नौकरी से निकाल दिया। अनिता ने थाणे में लेबर कोर्ट में मामला दायर किया। लेबर कोर्ट ने दिसम्बर 2012 में अनिता को अन्तरिम राहत देने का आदेश कम्पनी को दिया।

लेबर कोर्ट के आदेश के खिलाफ कम्पनी ने इन्डस्ट्रीयल कोर्ट में अपील की। लेबर कोर्ट के आदेश पर इन्डस्ट्रीयल कोर्ट ने रोक लगा दी। मामले को वापस लेबर कोर्ट भेज कर इन्डस्ट्रीयल कोर्ट ने अपने अधीनस्थ न्यायालय से पूछा : क्या अनिता वर्कमैन है ?

लेबर कोर्ट ने दस्तावेजों और गवाहों के परिक्षण के बाद इन्डस्ट्रीयल कोर्ट को बताया कि अनिता वर्कमैन है। कम्पनी ने अनुचित श्रम व्यवहार किया है।

इन्डस्ट्रीयल कोर्ट ने लेबर कोर्ट के निष्कर्ष को स्वीकार नहीं किया। इन्डस्ट्रीयल कोर्ट ने फिर मामला लेबर कोर्ट को वापस भेज कर पूछा : क्या अनिता वर्कमैन है ? हाँ या ना ?

लेबर कोर्ट ने फिर इन्डस्ट्रीयल कोर्ट को बताया कि अनिता वर्कमैन है और श्रम कानूनों के अनुसार सुरक्षा तथा राहत की हकदार है।

इन्डस्ट्रीयल कोर्ट ने फिर मामला लेबर कोर्ट को भेज कर पूछा है : क्या अनिता वर्कमैन है ?

लेबर कोर्ट और इन्डस्ट्रीयल कोर्ट में यही बातें 2019 में भी चल रही हैं।

सात वर्षों में न्यायालयों में सहमति नहीं बनी है। अनिता को कोई राहत नहीं मिली है। अनुचित श्रम व्यवहार के लिये कम्पनी को कोई कीमत अदा नहीं करनी पड़ी है।

(हिसार से एक मित्र ने मुम्बई के कृष्ण राव के ब्लॉग से जानकारी भेजी है।)

भविष्य निधि-पी एफ

भविष्य निधि की राशि कम करने, बहुत कम करने के लिये कम्पनियाँ अनेक हथकण्डे अपनाती रही हैं। इनके विरोध में भविष्य निधि संगठन के आदेशों के खिलाफ कम्पनियाँ हाई कोर्टों और सुप्रीम कोर्ट में अपीलें दायर करती रही हैं।

भविष्य निधि राशि कम करने के लिये कई कम्पनियाँ तनखा बहुत कम दिखाती रही हैं। इसके लिये इस-उस भत्ते का सहारा लिया जाता रहा है।

इधर 28 फरवरी 2019 को सुप्रीम कोर्ट ने वर्षों से लटकी कई कम्पनियों की अपीलें खारिज कर दी। सुप्रीम कोर्ट ने भविष्य निधि संगठन की इस दलील को स्वीकार किया है कि भत्ते एक हथकण्डा हैं तनखा कम दिखा कर भविष्य निधि राशि को कम करने का।

सुप्रीम कोर्ट ने आदेश दिया है कि ऐसे भत्तों पर भविष्य निधि राशि कम्पनियों को जमा करनी होगी।

✶ दिल्ली में **जी 4 एस** गार्ड ने बताया कि ग्रुप फोर कम्पनी ने दिल्ली के सात हजार गार्डों की 300 करोड़ रुपये राशि भविष्य निधि संगठन में जमा नहीं करवाई है। फोन में जमा होने का सन्देश नहीं आया है।

जी 4 एस कम्पनी भत्तों की आड़ में तनखा कम कर बहुत कम राशि भविष्य निधि संगठन में जमा करती थी। कुछ वर्ष पहले दिल्ली में ग्रुप फोर के सात हजार गार्डों के दबाव में भविष्य निधि संगठन को जाँच करनी पड़ी, कार्रवाई करनी पड़ी। जी 4 एस कम्पनी पर दण्ड लगाया। कम्पनी अपील में गई। परन्तु तब से ग्रुप फोर कम्पनी ने सब जगह गार्डों की भविष्य निधि कम से कम न्यूनतम वेतन पर लागू की।

✶**एलनोवा** (सी-58 ओखला फेज-1, दिल्ली) कम्पनी सी टी सी (कॉस्ट टू कम्पनी) खेल में अकुशल श्रमिक का पी एफ 7200 रुपये पर तथा कुशल श्रमिक का 8835 रुपये पर लागू किये है।

✶**ए आई एम आई एल** (ए-8 मोहन कोऑपरटिव इन्डस्ट्रीयल एस्टेट, दिल्ली) फैक्ट्री में कुशल श्रमिक का पी एफ मार्च 2019 तक 5-6000 रुपये पर रहा है। अप्रैल में पी एफ 14000 रुपये पर जबकि दिल्ली में यह अकुशल श्रमिक के लिये निर्धारित न्यूनतम वेतन है।

✶**पारेख इन्टीग्रेटेड सर्विस** (सी-41 ओखला फेज-2, दिल्ली) में 300-400 वरकर। भत्ते। महीने की पेमेन्ट 20-23 हजार रुपये। और पी एफ राशि 600-700-800 रुपये।

साझेदारी

✶ आई एम टी मानेसर, उद्योग विहार गुड़गाँव, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, नोएडा, फरीदाबाद में मजदूर समाचार का वितरण हर महीने होता है।

✶ मजदूर समाचार के वितरण के दौरान फुरसत से बातचीत मुश्किल रहती है। इसलिये मिलने-बातचीत के लिये पहले ही सूचना देने का सिलसिला आरम्भ किया है। चाहें तो अपनी बातें लिख कर ला सकते हैं, चाहें तो समय निकाल कर बात कर सकते हैं, चाहें तो दोनों कर सकते हैं।

- शुक्रवार, 28 जून को सुबह 6 बजे से साढे नौ तक आई एम टी मानेसर में सैक्टर-3 में बिजली सब-स्टेशन के पास मिलेंगे। खोह गाँव की तरफ से आई एम टी में प्रवेश करते ही यह स्थान है। जे एन एस फैक्ट्री पर कट वाला रोड़ वहाँ गया है।

- उद्योग विहार, गुड़गाँव में फेज-1 में पीर बाबा रोड़ पर वोडाफोन बिल्डिंग के पास वीरवार, 27 जून को सुबह 7 से 10 बजे तक बातचीत के लिये रहेंगे। यह जगह पेड़ के नीचे चाय की दुकान के सामने है।

- शनिवार, 29 जून को सुबह 7 से 10 बजे तक चर्चा के लिये ओखला.सरिता विहार रेलवे क्रॉसिंग (साइडिंग) पर उपलब्ध रहेंगे।

✶ फरीदाबाद में जून में हर रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। बाटा चौक से ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

फोन तथा व्हाट्सएप के लिये नम्बर : 9643246782

ई-मेल < majdoorsamachartalmel@gmail.com >

कुछ इमेल पते

केन्द्रीय पी एफ आयुक्त < cpfc@epfindia.gov.in >

चीफ विजिलैन्स पी एफ < cvo@epfindia.gov.in >

श्रम आयुक्त, हरियाणा < labour@hry.nic.in>

श्रम विभाग दिल्ली < labjlc2.delhi@nic.in >

ई एस आई महानिदेशक <dir-gen@esic.nic.in >

कुछ मोटा-मोटी बातें....(पेज चार का शेष)

उत्पादन हो चाहे यातायात, निर्माण हो चाहे व्यापार, शिक्षा हो चाहे मनोरंजन, विश्व-स्तर पर आज कम्पनियों की जो सँख्या है वह अतुलनीय है।

उत्पादन क्षेत्र में आज कम्पनी बनाने तथा कम्पनी को बनाये रखने के लिये दोहन के साधन और दोहन के स्तर नये प्रश्नों को सामने ले आये हैं।

दोहन के साधनों में रोबोट, आर्टिफिशियल इन्टेलिजेन्स (कृत्रिम बुद्धि) मानव श्रम को अधिक से अधिक असंगत बना रहे हैं।

आज दोहन के स्तर वायु , जल , मिट्टी को उस पैमाने पर प्रदुषित करने लगे हैं कि पृथ्वी पर जीवन दाँव पर लग रहा है।

रोजगार घटाते हुये उत्पादन बढाना कम्पनी स्वरूप में रुपये-पैसे को, मण्डी-मुद्रा को उनके अन्त में ले आया है।

उत्सव का समय है

अधम चाकरी कहने से नौकरी-चाकरी रुकी नहीं। परमानेन्ट नौकरी पर आ कर चाकरी ठहरी नहीं। अब टेम्परेरी नौकरियाँ भी विश्व-भर में तेजी से घटने की राह पर हैं। परन्तु यह विलाप का विषय नहीं है।

''कोई भी व्यक्ति मजदूर हो ही क्यों ?'' वाले प्रश्न के समाधान का समय है। उत्सव की वेला है।

कुछ मोटा–मोटी बातें

कम्पनी किसी की नहीं होती

तीस-चालीस वर्ष पहले फरीदाबाद में फैक्ट्रियों में अधिकतर मजदूर परमानेन्ट होते थे। चमचागिरी करने वालों, दलाली की फिराक में रहने वाले वरकरों से काम निकल जाने पर मैनेजमेन्टों द्वारा उन्हें धार पर धरना होता रहता था। ऐसे में स्थाई मजदूरों में चर्चा होती रहती थी।: ''कम्पनी किसी की नहीं होती।''

फैक्ट्रियों में मजदूरों के परमानेन्ट होने की तरह ही फोरमैन-सुपरवाइजर-मैनेजर भी फैक्ट्रियों में टिके रहते थे। इन साहबों में कुछ लोग कम्पनी की ज्यादा वफादारी के फेर में मजदूरों से पिटते थे और जरूरत पूरी होने पर बड़े साहबों द्वारा किनारे कर दिये जाते थे। यह लोग '' कम्पनी किसी की नहीं होती'' की बातों को रोचक बनाते थे।

नोएडा हो चाहे आई एम टी मानेसर, आज फैक्ट्रियों में अधिकतर वरकर टेम्परेरी हैं। मैनेजरों का इस कम्पनी को छोड़ कर उस कम्पनी में जाना भी अब काफी होता है। कम्पनी किसी की नहीं होती के संग आज कम्पनी का कोई नहीं वाली स्थितियाँ बनी हैं।

कम्पनी का कोई मालिक नहीं होता

फरीदाबाद में एस्कोर्ट्स कम्पनी की कई फैक्ट्रियाँ थी। प्रधान मंत्री इन्दिरा गाँधी के लन्दन निवासी मित्र स्वराज पॉल ने गुपचुप कम्पनी के चार-पाँच प्रतिशत शेयर खरीद कर 1982 में एस्कोर्ट्स कम्पनी पर कब्जा करने के लिये ताल ठोकी थी। एस्कोर्ट्स कम्पनी की मैनेजमेन्ट किसकी हो ? नन्दा परिवार की अथवा स्वराज पॉल की ?

थोथे पहलवानों की भिडन्त में सामने आये कुछ आँकड़े :

एस्कोर्ट्स कम्पनी के निर्माण तथा संचालन में लगे कुल पैसों का पन्द्रह प्रतिशत ही शेयरों से आया था। और शेयरों में 54 प्रतिशत सरकार की भारत जीवन बीमा निगम के पास थे। नन्दा परिवार जो कि एस्कोर्ट्स कम्पनी का मालिक कहलाता था उसके पास कम्पनी के चार-पाँच प्रतिशत शेयर ही थे।

और, एस्कोर्ट्स कम्पनी के निर्माण तथा संचालन में लगे कुल पैसों का 85 प्रतिशत बैंकों आदि से कर्ज था।

कम्पनियों के लिये पैसों का मुख्य स्रोत : ऋण।

पचास वर्ष पहले यही स्थिति बिड़ला समूह, टाटा समूह की कम्पनियों की थी। और यही स्थिति अमरीका, यूरोप, जापान में कम्पनियों की थी।

कम्पनी में लगे पैसों में एक प्रतिशत से भी कम जिसने लगाया है उसे आज भी कम्पनी का मालिक प्रचारित किया जाता है।

तनखा लेते हैं मालिक

रिलायन्स का मालिक मुकेश अम्बानी रिलायन्स कम्पनी से तनखा लेता है। निवास, गाड़ी, भत्ते भी रिलायन्स कम्पनी मुकेश अम्बानी को देती है।

बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स के निर्देशन में चेयरमैन, मैनेजिंग डायरेक्टर कम्पनी का संचालन करते हैं। चेयरमैन, मैनेजिंग डायरेक्टर कम्पनी से तनखा लेते हैं, भत्ते लेते हैं और उन्हें कम्पनी का मालिक प्रचारित किया जाता है।

तनखा-भत्तों के अलावा, आमतौर पर चेयरमैन, मैनेजिंग डायरेक्टर कम्पनी की चोरी भी करते हैं। फैक्ट्री में जनरल मैनेजर की चोरी की तुलना में कम्पनी चेयरमैन बड़ी चोरी करते हैं।

कम्पनी सरकारी कही जाती है अथवा गैर-सरकारी कही जाती है इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। कम्पनी का मुख्यालय मुम्बई में है अथवा दिल्ली में, लन्दन में है अथवा न्यू यॉर्क में, टोकयो में है अथवा शंघाई में, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता

बहुत कमजोर हो गई हैं कम्पनियाँ

जापान में मैनेजमेन्टों के बीच 1992 में एक गहन चर्चा हुई थी। विषय था: परमानेन्ट मजदूर और टेम्परेरी वरकर। साहबों को दिक्कतें परमानेन्ट मजदूरों से भी बहुत थी परन्तु फिर भी उन्हें लगता था कि परमानेन्ट मजदूरों में कम्पनी के प्रति कुछ वफादारी होती है। टेम्परेरी वरकरों के बारे में साहबों का मत था कि कम्पनी के प्रति उनकी कोई वफादारी नहीं हो सकती। सम्पूर्ण कम्पनी सिस्टम के लिये टेम्परेरी वरकर बहुत खतरनाक हैं, घातक होंगे। परन्तु कम्पनियाँ क्या करें ? परमानेन्ट मजदूर कुछ महँगे पड़ते थे और कम्पनियाँ इतनी कमजोर हो गई थी कि परमानेन्ट मजदूर रखना उनके बस में नहीं रहा था।

इन पच्चीस-तीस वर्षों के दौरान विश्व-भर में टेम्परेरी वरकरों की सँख्या बहुत तेजी से बढी है। और, कम्पनियाँ अधिक कमजोर हुई हैं।

व्यक्ति-समूह-संस्था के लिये सुरक्षा बहुत-ही महत्व रखती है। इस सन्दर्भ में नोएडा, दिल्ली, गुड़गाँव, फरीदाबाद में कम्पनियों के सुरक्षाकर्मियों को देखें। नब्बे-पिचानवे प्रतिशत सुरक्षाकर्मी 12-12 घण्टे की शिफ्टों में ड्युटी करते हैं। गार्ड को साप्ताहिक अवकाश नहीं, त्यौहारी छुट्टी नहीं। सुरक्षाकर्मियों की वर्ष के 365 दिन ड्युटी। पिचानवे-अठानवे प्रतिशत सुरक्षाकर्मी ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे जाते हैं। दिल्ली और इर्द-गिर्द के औद्योगिक क्षेत्रों की फैक्ट्रियों में, संस्थानों में, निवास स्थलों पर प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर 30-31 दिन के गार्ड को आठ हजार रुपये, दस हजार, बारह हजार, पन्द्रह हजार, बीस हजार रुपये। आठ घण्टे की ड्युटी और साप्ताहिक अवकाश पर महीने में मिलते पैसों को तनखा कहते हैं। आठ घण्टे ड्युटी के बाद काम को ओवर टाइम कहते हैं और उसका भुगतान दुगुनी दर से करने का कानून है। तो, नोएडा-दिल्ली-गुड़गाँव-फरीदाबाद में गार्ड की तनखा 3200 रुपये, 4800 रुपये, 6000 रुपये, 8000 रुपये। साफ है कि कम्पनियाँ बहुत असुरक्षित हैं। मारुति सुजुकी मानेसर फैक्ट्री में 18 जुलाई 2012 को साहब लोग जब पिट रहे थे तब सैंकड़ों सुरक्षाकर्मी देखते रहे थे।

और, ठेकेदार कम्पनी

फुटकर मामलों में ही आज ठेकेदार कोई व्यक्ति है। संसार-भर में टेम्परेरी वरकरों की सप्लाई के लिये बड़ी सँख्या में ठेकेदार कम्पनियाँ बनी हैं। उत्पादन क्षेत्र हो चाहे यातायात, सुरक्षा का प्रश्न हो चाहे सफाई का, सरकारी क्षेत्र हो चाहे गैर-सरकारी क्षेत्र, अधिकतर मजदूरों की सप्लाई अब ठेकेदार कम्पनियों के जरिये की जाती है।

नाकारा हो गई हैं कम्पनियाँ

डेढ सौ वर्ष से कम्पनियाँ बन्द होने और नई कम्पनियों के बनने का सिलसिला चल रहा है।

उत्पादन में इलेक्ट्रोनिक्स के प्रवेश ने 1970-1980 के दौरान अमरीका, यूरोप, जापान में बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियों के बन्द होने की गति तीव्र की थी। इसी प्रक्रिया में फिर रूस और चीन में सरकारी कम्पनियाँ बहुत तेजी से बन्द हुई। फरीदाबाद में 1990-2000 के दौरान लेथ मशीन का स्थान सी एन सी मशीन द्वारा लेने ने फैक्ट्रियाँ बन्द होने को गति दी थी और यह पूरे भारत के औद्योगिक क्षेत्रों में हुआ था।

इधर इन बीस वर्षों के दौरान विशेष करके चीन, भारत, बांग्लादेश आदि क्षेत्रों में नई कम्पनियों की बाढ आई है। (बाकी पेज तीन पर)

28 हजार

मजदूर समाचार के मई अंक की 28 हजार प्रतियाँ छपी। व्हाट्सएप और ईमेल द्वारा कई अन्य पाठक जुड़े हैं।

मई अंक की 28 हजार प्रतियाँ जो छपी हैं वो पाठकों द्वारा और पाठक निर्मित करने की प्रक्रिया के कारण हैं। पाठक अपनी प्रति के साथ पाँच-दस-बीस-पचास-सौ-पाँच सौ-दो हजार प्रतियाँ ले कर अपने सन्दर्भ और संवाद रच रहे हैं।

सब को निमन्त्रण है।

सम्पर्क के लिये फोन और व्हाट्सएप नम्बर : 9643246782

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया। RN 42233
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।